प्लास्टिक पलवार

कृषि कुंभ (अप्रैल, 2023),
खण्ड 02 भाग 11, पृष्ठ संख्या 66–67

औद्यानिकी फसलों के उत्पादन में प्लास्टिक पलवार का उपयोग

अभिषेक प्रताप सिंह[1], रामावथ रमेश बाबू[1], अमृता सिन्हा[1], इमतीनुनसैंग जमीर[1], अर्नव कुंडू[1], कुन्दन कुमार[1], अभिषेक कुमार[1] एवं आर. पी. सिह[2]

[1]कृषि विज्ञान केंन्द्र, लादा, समस्तीपुर–डॉ0 राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर,बिहार –848125, उ०प्र०,
[2]भगंवत विश्वविद्यालय,अजमेर, राजस्थान, भारत।

Email Id: abhishek.veg@gmail.com

आज के समय में सब्जी उत्पादक किसानों के सामने खरपतवार का उगना ही काफी लागत में वृद्धि कर देता है तथा उत्पादकता भी कम हो जाती है जिससे बचने के लिए किसान भाइयों को निराई–गुड़ाई करते हैं लेकिन अगर प्लास्टिक पलवार का उपयोग करते हैं तो उत्पदकता में वृद्धि के साथ ही साथ उत्पादन की गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है। पहले के समय में किसान पलवार के रूप में कार्बनिक पदार्थ जैसे पूवाल, पौधों की पत्तियों, फसलों के अवशेष परन्तु वर्तमान समय में इसकी उपलब्धता नहीं होने तथा लागत में ज्यादा होने की वजह से प्लास्टिक पलवार का उपयोग एक अच्छा विकल्प साबित हो सकता है। यह आसानी से हर जगह पर उपलब्ध होने तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने व लगाने में भी आसान होता है। इन सभी विशेषताओं के कारण आज कृषि में प्लास्टिक पलवार का उपयोग बढ़ रहा है।

प्लास्टिक पलवार के फायदें :–

1. खरपतवारों की वृद्धि रोकने में सहायक,
2. मृदा तापमान को फसलों के अनुरूप बनाये रखना तथा सूक्ष्म जलवायु का निर्माण में सहायक,
3. मृदा कटाव को रोकने में मदद करता है,
4. गुणवत्ता युक्त उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि।

पलवार का उत्पादन पर प्रभाव

क्र. सं0	फसल	पलवार की मोटाई (माइक्रोन)	उत्पादन में वृद्धि (प्रतिशत)
1	अमरूद	100–150	25–30
2	स्तंरा	100–150	45–50
3	बैंगन, आलू, शिमला मिर्च	20–25	30–40
4	टमाटर, ब्रॉक्ली, फूलगोभी	20–25	40–45

प्लास्टिक के प्रकार :–

पलवार अलग–अलग रंगों जैसे कि काले, पारदर्शी, पीला, सिल्वर, लाल आदि उपलब्ध हैं। अधिकतर काली अथवा सिल्वर रंगों की प्लास्टिक पलवार मुख्य रूप से उपयोग में लायी जाती है।

प्लास्टिक पलवार का चयन :–

इसका चयन सब्जी फसलों के जरूरत के हिसाब से किया जाता है। सामान्य तौर पर 120 सेमी. चौड़ी प्लास्टिक पलवार का उपयोग अधिकतर किया जाता है। जिससे पलवार के उपरान्त अन्य कृषि कार्य सुगमतापूर्वक किया जा सके।

पलवार की मोटाई :–

अलग–अलग फसलों की आवश्यकतानुसर निम्न मोटाई के पलवार का उपयोग करते हैं–

क्र. सं0	मोटाई (माइक्रोन में)	फसल अवधि
1	20–25	वार्षिक/लघु अवधि
2	40–45	द्विवार्षिक मध्यम अवधि
3	50–100	वहुवार्षिक अधिक अवधि

पलवार को लगाना :–

पलवार को बुवाई/रोपाई पूर्व ही लगाना लाभदायक तथा आसान होता है। खेत की तैयार के उपरान्त क्यारी बनाकर पलवार लगाकर किनारे–किनारे से दना दिया जाता है जिसके लिए श्रमिक के अपने ट्रैक्टर द्वारा पलवार लगाने वाली मशीन का भी उपयोग किया जाता है।

पलवार लगाते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए :–

1. पलवार लगाने से पूर्व आवश्यक सभी खाद एवं उर्वरकों को भली–भांति खेत की तैयारी के समय मिलाने के उपरान्त बेड़ बनाकर ही पलवार बिछाना चाहिए।
2. बीजों की बुवाइ अथवा पौधों की रोपाई पलवार में बने छिद्रों में सीधे करना चाहिए।
3. पलवार लगाने के उपरान्त आवश्यकतानुसार (पौधे के प्रकार के आधार) दूरी पर ग्लास की सहायता से भी छिद्र बनाया जा सकता है।
4. टपक (ड्रिप) सिंचाई पद्धति है तो लेटरल को पलवार बिछाने के पूर्व बनी हुई क्यारियों पर रखा जाता है। जिससे सिंचाई एवं पोषक तत्वों का समुचित व्यवहार किया जा सके।

पलवार को हटाना/निस्तारण करना :–

फसलों से उत्पादन लेने के उपरान्त खेत से निकालकर सुरक्षित रखा जा सकता है। पुनः उपयोग हेतु परन्तु एक फसल लेने के उपरान्त दूसरी फसल भी लिया जा सकता है। फसलों की कटाई के बाद अगर पलवार फट गई है तो उसे खेत से निकाल लेना चाहिए क्योंकि प्लास्टिक पलवार खेत में अपघटित नहीं होती है जिससे प्रदूषण की समस्या बनी रहती है।